प्यार, सरलता और दृढ़ संकल्प की कहानी में आपका स्वागत है।
कहानी, जीवन के कठोर चट्टानों के विश्वविद्यालय की ...

1970 के दशक की बात है जब, एक युवा ने अपने पिता की दुकान पर काम करके अपने जीवन की यात्रा की शुरुवात की, लेकिन कुछ ही समय में काम छोड़ दिया। यहां तक कि उन्होंने एक बैंक में नौकरी का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया। इस युवा का नाम था नंद किशोर चौधरी ।

नंद ने एक नए सिरे से बदलाव लाना चाहा, नहीं पता था क्या और कैसे लेकिन फिर भी जवाब की तलाश में उन्होंने अपने परिवार और पड़ोसियों के साथ अपनी बात को रखा और यहीं, छोटे से शहर चूरू से एक ऐसे सपने की शुरुआत हुई जो दुनिया में एक मिसाल कायम किये हुए है।

समय के साथ, नंद एक अंतर्मुखी लेकिन एक उत्साही पाठक और प्रकृति प्रेमी बनते गए। उन्होंने टैगोर, गांधी के कार्यों और रामायण-भगवद गीता के आध्यात्मिक ग्रंथों का भी अध्ययन किया और ऐसे ही नंद किशोर ने अपनी विरासत की खोज की जिसमे उन्होंने अपने मूल्यों को पहचानने और अपने जीवन-उद्देश्य के खोज में अपनी यात्रा का शुभारम्भ किया।

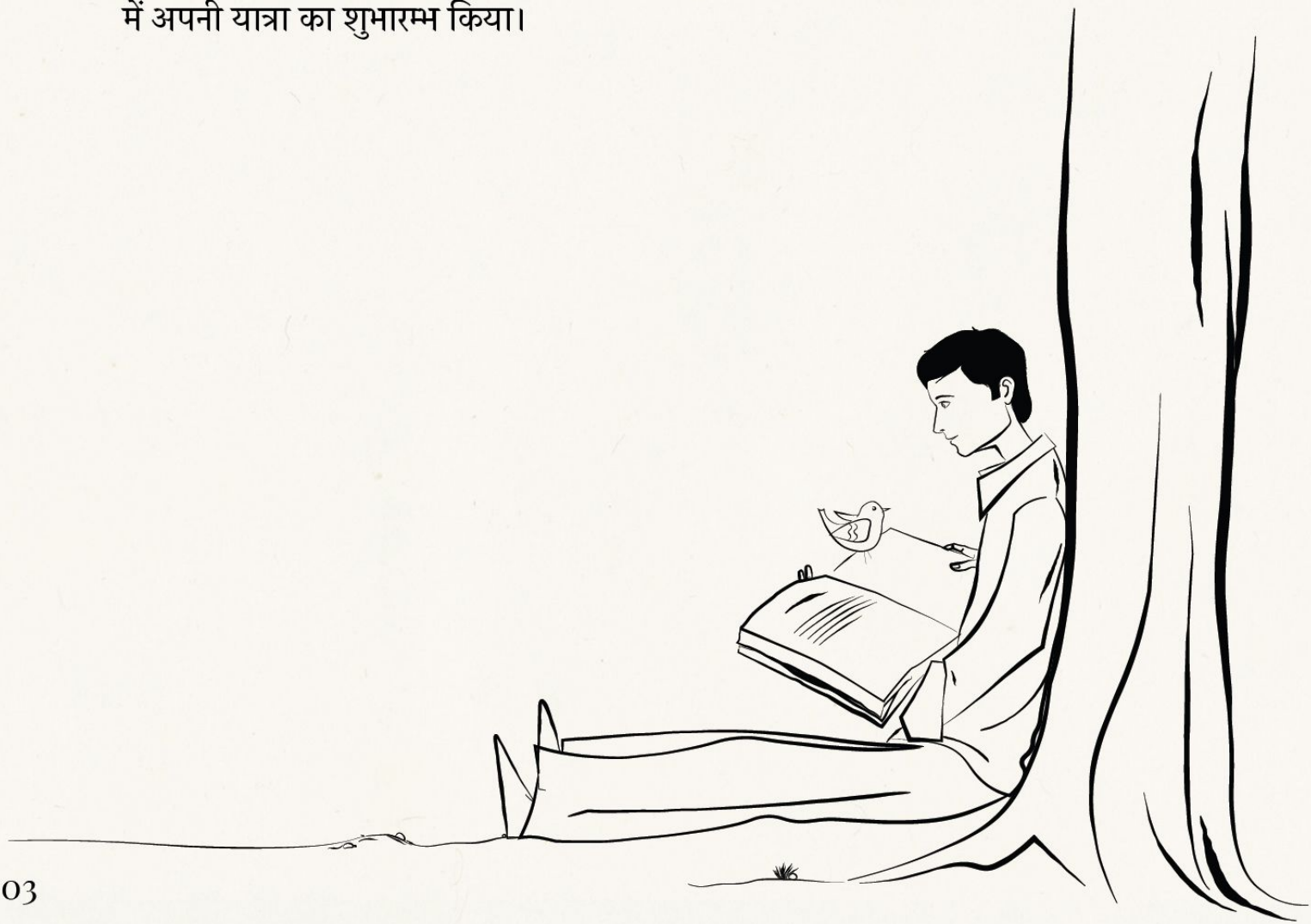

कुछ समय बाद ही, नंद की एक ब्रिटिश डिजाइनर और शोधकर्ता इले कूपर से मुलाकात हुई, जो शेखावाटी के दीवार के चित्रों का अध्ययन करने के लिए राजस्थान आए थे। नंद और इले की दोस्ती हुई और इस दोस्त ने ही नंद को पुनर्जीवित और प्रेरित किया। कुछ अलग, नयी पहल की शुरुवात करने के लिए, यानि गलीचे की दुनिया में कदम रखने लिए।

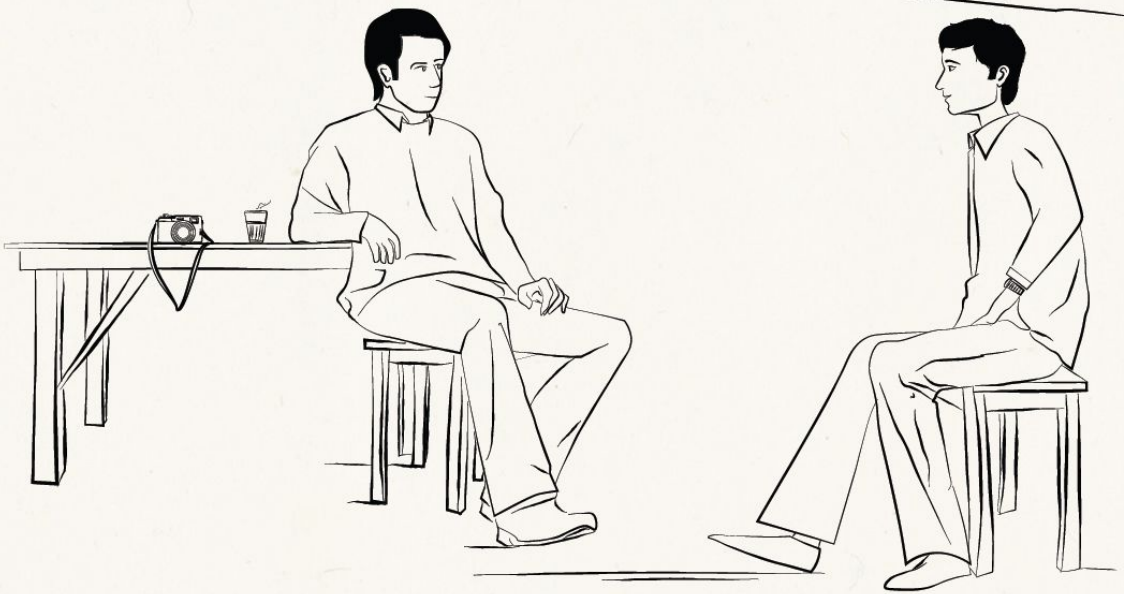

जब पहली शुरुवात के लिए कुछ बीज बो गए ...
इले की सलाह से, नंद किशोर ने कालीन बुनाई के काम कि
दुनिया में कदम रखा। उन्होंने अपने पिता से 5000 रुपए उधार के
तौर पर लिए जिससे एक साइकिल, कुछ कच्चा माल खरीदा और
राजस्थान के छोटे से गांव चूरू से नौ कारीगरों, दो लूम के साथ
अपने काम को शुरू किया।
एक सपना जो अब में सच तब्दील हो रहा था!

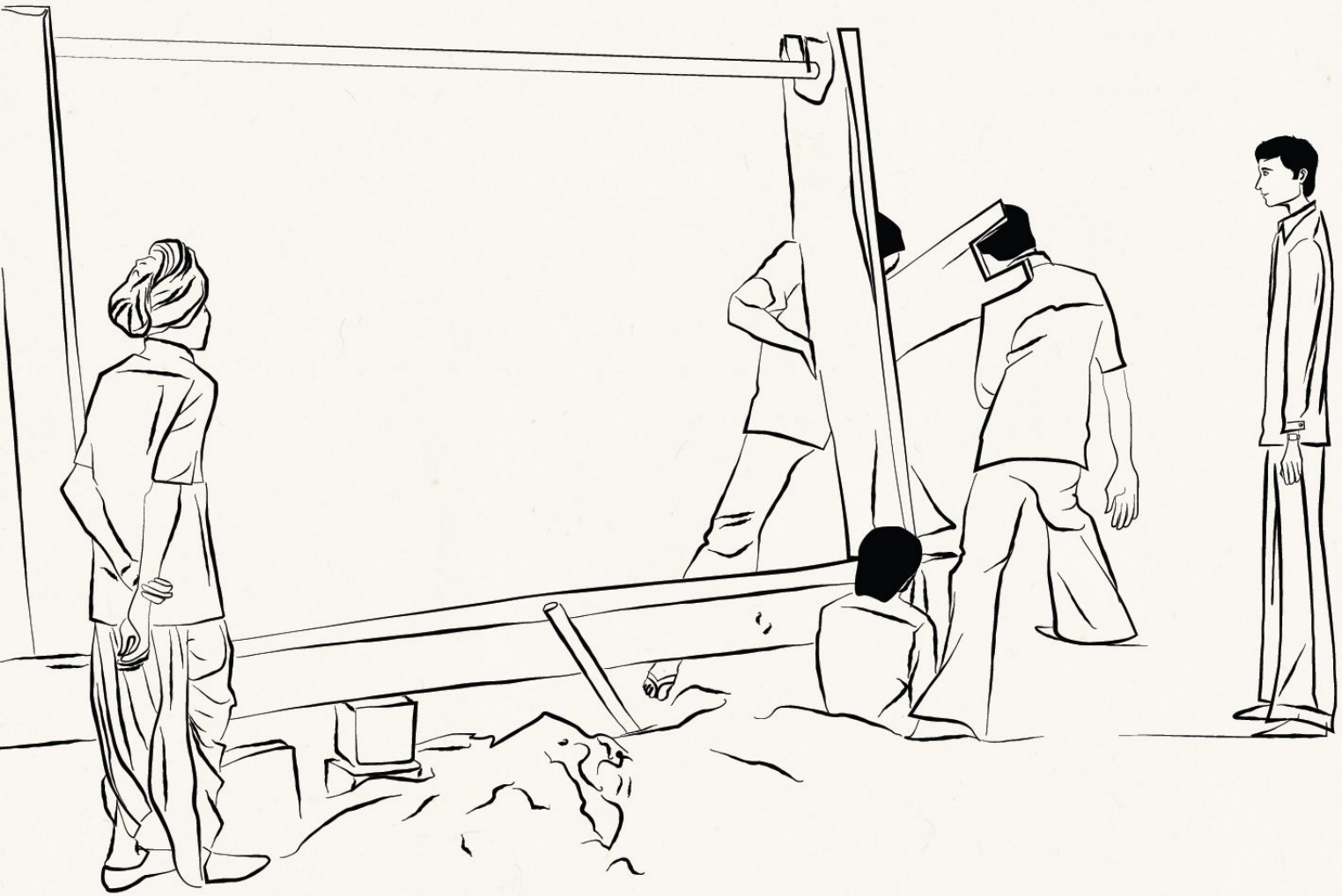

समाज के बनाये कुरीतियों से जंग...

शुरुवात तो हो गयी, नींव भी रख पड़ गयी थी लेकिन चुनौतियां सामने खड़ी थीं। ये वो पहली बाधा थी जिसने छुवाछुत के कुरीतियों से लड़ने के लिए नंद को अग्रसर किया। उस समय में मौजूद कारीगरों को निचले समुदाय का माना जाता था। लेकिन नंद हमेशा सभी के साथ सम्मान और प्रेम के साथ व्यवहार करने में विश्वास रखते थे और उनकी इसी सोच ने उनके सभी फैसलों का मार्गदर्शन किया। विश्वास से अधिक, उन्होंने जाति व्यवस्था को कभी नहीं समझा। वह कहते हैं, "एक इंसान का परिचय उसके काम से होना चाहिए, न कि किसी और तथ्य से।"

नतीजतन, नंद किशोर को ये एहसास होने लगा की, "मुझे परिवार ने खारिज कर दिया है, कोई भी उनपर भरोसा नहीं कर रहा था।
दूसरी तरफ उनके कारीगरों को समाज ने नकार दिया था। और यहां फिर दो ऐसे लोग एक साथ आए जिन्हे एक दूसरे में प्यार मिला। जो समाज से निष्काषित किये जा चुके थे और इस तरह प्यार और विश्वाश की बुनियाद से जयपुर रग्स का गठन हुआ।

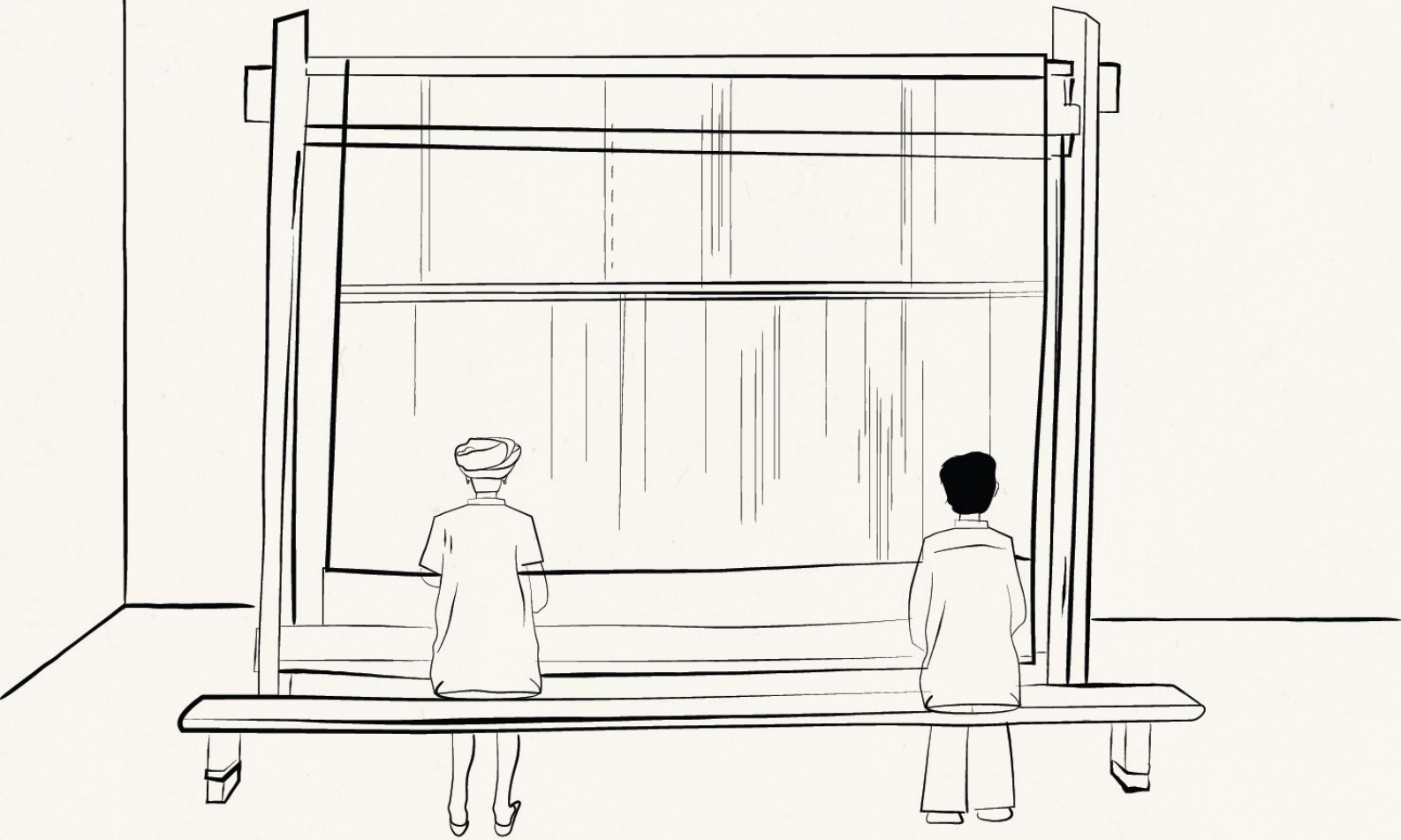

दिन-प्रतिदिन कामजारी रहा, नंद किशोर और उनके साथी कारीगरों ने बेनेरस के एक उस्ताद से बुनाई की कला सीखी।
परिश्रम और जुनून के साथ अपने पहले गलीचे का निर्माण किया। जो 6*4 वर्ग फुट के दो गलीचे थे और इन्हे 'भारत कालीन उद्यम' के नाम से निर्यात किया गया था।'